गुणा केयम अजांणमें, गुणा डिठम मय अजांण।
दम न चुरे रे हुकम, जडे धणी पूरी डिंनी पेहेचान।। ३१ ।।

मैंने गलतियां अनजाने में की हैं। अपने गुनाहों को भी देखा तो अनजाने में ही देखा, क्योंकि जब धनी ने पूरी पहचान करा दी तो पता चला कि धनी के हुकम के बिना कुछ नहीं होता।

जांण गिडम से पण खुदी, आंऊं जुदी थियां हिनसे।
जुदी रहां त पण खुदी, खुदी किए न निकरे हिनमें।। ३२ ।।

मैंने जान लिया कि 'मैं' कहना ही अहंकार है, तो इसलिए इससे दूर हो जाऊं। यह 'मैं' भी गुनाह भरा है। किसी तरह से भी यह 'मैं' अहंकार नहीं निकलता।

महामत चोए हे मोमिनों, कोई कितईं न धणी रे।
फिरी फिरी लख भेरां, न्हारयम सहूर करे।। ३३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे मोमिनो! धनी के बिना कहीं कुछ नहीं है। मैंने फिर से लाख बार देखकर विचार कर लिया है और यही नतीजा निकाला।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ४७० ।।

खुदीजी पेहेचान

लखे भते न्हारयम, खुदी वंजे न किये केई।
हे मूर मंझा कीं निकरे, जा कांधे डेखारई बेई।। १ ।।

मैंने लाखों तरह से देखा, परन्तु यह मैखुदी (अहंभाव) किसी तरह से निकलती नहीं। यह मूल से निकले भी कैसे? धनी ने हमें अपने अतिरिक्त दूसरा कुछ दिखाया है तो यह मैखुदी (अहंभाव) माया ही है।

जे घुरां इस्क, त हित पण पसां पांण।
हे पण खुदी डिठम, जडे थेयम हक पेहेचान।। २ ।।

मैं इश्क मांगती हूं तो इसमें भी मैखुदी आ जाती है। जब श्री राजजी महाराज की पहचान हो गई तो भी मैखुदी आ गई।

हक पेहेचान के के थेई, हित बिओ न कोई आए।
जे कढे बारीकियूं खुदियूं, डे थो हक सांजाए।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज की पहचान किनको हुई? यहां कोई दूसरा है ही नहीं जो मैखुदी की बारीकियों को निकाल दे और श्री राजजी की पहचान करा दे।

तन पांहिजा अर्समें, से तां सूतां निद्रमें।
जागे थो हिक खावंद, ही निद्रडी आं दी जे।। ४ ।।

हमारे मूल तन परमधाम में फरामोशी में हैं, केवल एक श्री राजजी महाराज जागृत हैं, जिन्होंने यह माया दी है।

डेई रूहें के निद्रडी, डिखारयांई हे रांद।
हे केर डिसे थी रांद के, हित को आए हुकम रे कांध।। ५ ।।

उन्होंने रूहों को नींद देकर खेल दिखाया है। यहां पर खेल को अब कौन देख रहा है? क्या धनी के हुकम के बिना और कोई है?

Nijanand App

पांण तां सुत्युं अर्स में, तरे धणी कदम।
जे रमे रमाडे रांदमें, ब्यो कोए आय रे हुकम।। ६ ।।

हम तो परमधाम में श्री राजजी के चरणों में सोए हैं। खेल में जो खेलते या खिला रहे हैं, वह सब धनी के हुकम के बिना कोई नहीं है।

धणी या रांद बिच में, पडदो तो वजूद।
पुठ डेई हकके ही पसो, हे जो न्हाए कीं नाबूद।। ७ ।।

धनी और खेल के बीच तेरे तन का परदा है। तुम श्री राजजी महाराज को पीठ देकर झूठे खेल की तरफ देख रही हो। जो मिटने वाला है या नाबूद है।

हित हुकम हिकडो हकजो, उनहीं हकजो इलम।
हुकम इलम या रांद के, पसो बेठ्यूं तरे कदम।। ८ ।।

यहां केवल श्री राजजी महाराज का एक हुकम है और उन्हीं का ही इलम है। हुकम, इलम या खेल को श्री राजजी के चरणों तले बैठकर तुम देख रही हो।

चोए इलम कुंजी अंईं, पट पण आयो अंई।
अकल आंजी अगरे, पसो उलटी या सई।। ९ ।।

इलम कहता है—हे मोमिनो! तुम ही परदा हो। तुम ही कुंजी हो और जागृत बुद्धि का ज्ञान भी तुमको दे दिया है। अब इसे सीधा देखो या उलटा देखो।

हे रांद हुकम इलमजी, पांण के सुतडे डिखारे।
खिल्लण बिच अर्स जे, पांण के रांद्यूं थो कारे।। १० ।।

यह खेल ही हुकम और इलम का है जो हमको सोता हुआ नींद में दिखाता है। परमधाम में हमारे ऊपर हंसने के लिए हमें यह खेल भुलाता है।

हित बिओ कोए न कितईं, सभ डिसे हुकम इलम।
जे उडे नाबूद हुकमें, त पसो बेठ्यूं तरे कदम।। ११ ।।

यहां हुकम और इलम के बिना दूसरा कोई कहीं दिखाई नहीं देता। अगर हुकम से यह सारा संसार उड़ जाए तो हम श्री राजजी के चरणों के तले बैठे मिलेंगे।

धणी द्वार डिंनो असां हथमें, बिओ इलम डिंनाऊं जांण।
त कीं सहूं आडो पट, को न उपट्यो पांण।। १२ ।।

हे धनी! आपने परमधाम का दरवाजा हमारे हाथ में दे दिया है और अपनी पहचान का इलम भी दिया है। अब मैं आपके बीच में परदा कैसे सहन करूं? क्यों न दरवाजे को खोल दूं?

जे रे हुकम पट खोलियां, त द्रजां खुदी जे गुने।
न तां कुंजी डिंनाऊं हथ आसिक, सा मासूक विछोडो कीं सहे।। १३ ।।

जो बिना हुकम के परदा खोल दूं तो मैखुदी के गुनाह से डरती हूं। वरना हम आशिक रूहों के हाथ जो कुंजी दे दी है, तो हम आपका वियोग कैसे सहन करें?

Nijanand App

जे होयम जरा इस्क, त न पसां खुदी हुकम।
पण हिक न्हाएम इस्क, ब्यो पसां आडो हुकम इलम।। १४ ।।

जो थोड़ा सा भी इश्क होता, तो मैं हुकम की तरफ न देखती। यहां पर इश्क है नहीं और दूसरे हुकम और इलम को आड़ा खड़ा देखती हूं।

न तां जे दर उपटियां, पसण धणी रेहेमान।
कीं न्हारियां वाट हुकमजी, धणी डिंनी कुंजी पेहेचान।। १५ ।।

नहीं तो आपने जो दरवाजा मेहरबानी से खोल दिया है, तो आपके दर्शन के लिए हुकम की तरफ क्यों देखूं? आपने तारतम ज्ञान की कुंजी भी दे दी है और पहचान भी करा दी है।

सुकेमें डियां कीं डुबियूं, जे अचिम जरा इस्क।
त हुकम खुदी न्हाए गुणो, पट दम न रखे बेसक।। १६ ।।

यदि जरा सा भी इश्क आ जाए तो हुकम और खुदी के लिए कोई गुनाह नहीं लगेगा। एक पल में परदा खोल दूंगी, परन्तु इश्क के बिना सूखे में डुबकियां कैसे लगाऊं?

इस्क मंगां त गुणो, खुदी पण गुनेगार।
हुकम इलम जे न्हारियां, त आंऊं बंधिस बिंनी पार।। १७ ।।

इश्क मांगती हूं तो गुनाह लगता है। अहंकार भी गुनहगार बनाता है। हुकम और इलम को जो देखती हूं, तो मैं दोनों तरफ से बंधी हूं।

जे सहूर करे न्हारियां, त खुदी मंगण तरे हुकम।
त दर उपटे पांहिजो, गडजां को न खसम।। १८ ।।

विचार करके देखती हूं तो मेरे द्वारा मांगना भी हुकम से ही होता है। तो फिर अपना दरवाजा खोलकर श्री राजजी से क्यों न मिल जाऊं?

खुदी गुणो हुकमें, घुरां कुछां हुकम।
पट लाहियां या जे करियां, सभ हुकमें चयो इलम।। १९ ।।

अहंकार गुनाह है। यह सब हुकम से है। मांगती हूं, बोलती हूं, तो भी हुकम से। परदा खोलती हूं या जो कुछ भी करती हूं सब हुकम से ही होता है। ऐसा आपका इलम हमें बताता है।

हित खुदी न गुणो के सिर, दर उपट या ढक।
पस पिरी या रांद के, आखिर ईं चोए इलम हक।। २० ।।

यहां पर अहंकार का दोष किसी के सिर नहीं है। दरवाजा खोलो या बन्द रखो। धनी को देखो या खेल को देखो। अन्त में श्री राजजी महाराज का इलम यही कहता है।

सभ डिंनो दिल मोमिन जे, जो मोमिन दिल अर्स।
पस पाण पांहिजे दिलमें, दिल मोमिन अरस-परस।। २१ ।।

आपने मोमिनों के दिल में सब कुछ दे दिया है। मोमिनों के दिल को अर्श किया है। हे धनी! अब अपनी तरफ अपने दिल को देखो। हम मोमिन आपके दिल में हैं। आप हमारे दिल में हैं।

Nijanand App

अर्स दिल मोमिन जो, जे पसे अर्स मोमिन।
चाहिए कोठियां हक अर्समें, त तो पेरो न्हाए ए तन।। २२ ।।

मोमिनों का दिल ही अर्श है। मोमिन ही परमधाम को देखते हैं। जब श्री राजजी महाराज मोमिनों को परमधाम बुलाते हैं तो उनके संसार के तन पहले ही छूट जाते हैं।

महामत चोए हे मोमिनों, धणिएं पूरी केई खिल।
पिरी पसो या रांद के, हक बेठो अर्स तो दिल।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने पूरी हंसी की है। अब खेल को देखो या धनी को देखो। श्री राजजी महाराज तुम्हारे दिल को अर्श करके बैठे ही हैं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ४९३ ।।

हुकमजी पेहेचान

ताडो कुंजी ना दर उपटण, समझाए डिंनी सभ तो।
बेठा आयो मूं दिलमें, जीं जांणो तीं गडजो।। १ ।।

न ताला है, न कुंजी है, न कोई दरवाजा खोलना है। यह बात आपने समझा दी है। आप मेरे दिल में ही आकर बैठ गए हैं। अब जैसे जानो वैसे मुझे मिलो।

सेहेरग से ओडडो, आडो पट न द्वार।
उघाड़िए अंख समझजी, डिसंदी न डिसे भरतार।। २ ।।

आपने अपना ठिकाना सेहेरग से नजदीक बताया है। जिसके बीच न कोई दरवाजा है, न परदा है। आपने हमारी समझ की आंखें खोल दी हैं। जिससे देखते हुए भी, हे धनी! मैं आपको नहीं देख पा रही हूं।

हुकम इलम खेल हिकडो, ब्यो कोए न कितईं दम।
हित रूह न कांए रूहनजी, जे कीं थेयो से सभ हुकम।। ३ ।।

यह खेल हुकम और इलम का है। यहां दूसरा कुछ भी नहीं है। यहां किसी की रूह आई ही नहीं है। जो कुछ हुआ है, सब हुकम से हुआ है।

पांहिज्यूं सुरत्यूं हुकम, ही रांद डेखारे हुकम।
रमे रांद मोहोरा हुकमें, डेखारे तरे कदम।। ४ ।।

हमारी सुरता हुकम से ही है। खेल भी हुकम दिखा रहा है। यह त्रिदेव भी आपके हुकम के तले खड़े खेल दिखा रहे हैं।

जे अरवाएं अर्स जी, से सभ हकजी आमर।
असां हुज्जत गिडी अर्स जी, अग्यां बेठ्यूं हक नजर।। ५ ।।

हम जो परमधाम की रूहें हैं, वह श्री राजजी महाराज के ही हुकम के अधीन हैं। हमने भी परमधाम का दावा ले रखा है, जबकि हम मूल-मिलावे में श्री राजजी के चरणों तले सामने बैठी हैं।

अरवा असां जी आमर, गुण अंग इंद्री आमर।
असीं डिसूं सभ आमर के, रांद डिखारे पट कर।। ६ ।।

हमारी सुरता हुकम के अधीन हैं। गुण, अंग, इन्द्रियां भी हुकम की है। मैं जो देखती हूं सब हुकम है। यह हुकम ही परदा डालकर खेल दिखला रहा है।

Nijanand App